व्यक्तित्व के प्रकार

व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अलग–अलग शिक्षाशास्त्रियों ने अपने विचार पृथक–पृथक् प्रकट किये हैं, जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है–

(1) क्रेश्मर के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार

क्रेश्मर (Kreschmer) ने व्यक्तित्व के चार प्रकार बताये हैं–

1. **पिकनिक** – इस प्रकार के व्यक्ति साहसी, छोटे, पुष्ट और गोल आकृति के होते हैं।
2. **एस्थेनिक** – इस प्रकार के व्यक्ति पतले, चपटे, गोल, कोमल शारीरिक गठन वाले, लम्बे अंग वाले, चपटे तथा तंग सीने वाले होते हैं।
3. **एथलेटिक** –इस प्रकार के व्यक्ति अच्छी माँसपेशी वाले होते हैं। इनके कन्धे चौड़े, हाथ लम्बे और पुष्ट अंगों वाले होते हैं।
4. **डिस्प्लास्टिक** – यह व्यक्ति अनुचित शारीरिक अनुपात वाले तथा विशेष शारीरिक गठन रखने वाले होते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व के व्यक्तियों में शारीरिक विकास की अनेक असमान्यताएँ भी पायी जाती हैं।

केश्मर ने यह निष्कर्ष निकाला है कि एस्थेटिक तथा एथलेटिक शारीरिक रचना वाले व्यक्ति शर्मीले, अकेले रहने वाले तथा संवेदनशील होते हैं। वे सामाजिक सम्पर्कों से अलग रहते हैं। वे दिवास्वप्न में अपना अधिक समय बिताते हैं। संवेगात्मक रूप से दमित तथा समस्याओं के प्रति सैद्धान्तिक एवं आदर्शवादी होते हैं। पिकनिक प्रकार के व्यक्ति बातूनी, दयालु तथा सामाजिक सम्पर्क रखने वाले होते हैं।

(2) शेल्डन के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार– शेल्डन ने तीन प्रकार के व्यक्तित्व बताये हैं–

1. **एण्डोमार्फिक** – इस प्रकार के शारीरिक गठन वाले व्यक्ति गोल–मटोल तथा नरम होते हैं। ऐसे व्यक्ति आराम पसन्द, भावुक तथा सुख चाहने वाले होते हैं।
2. **मेसोमार्फिक** – ऐसे व्यक्ति गठीले तथा मजबूत शरीर वाले होते हैं। यह व्यक्ति स्वभाव से क्रियाशील, शक्तिशाली तथ आक्रामक एवं फुर्तीले स्वभाव के होते हैं। इनमें उपलब्धि का स्तर उच्च होता है।

3. एक्टोमार्फिक – इस प्रकार के गठन वाले व्यक्ति दुबले–पतले तथा कमजोर शरीर वाले होते हैं। स्वभाव से संवेदनशील, नाजुक, बौद्धिक और पलायनवादी होते हैं।

(3) विलियम जेम्स के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार – विलियम जेम्स ने दो प्रकार के व्यक्ति बताये हैं–

1. कोमल हृदय वाले – इनका व्यवहार अमूर्त सिद्धान्तों के द्वारा निर्देशित होता है। ऐसे व्यक्ति बुद्धिजीवी, आशावादी, आदर्शवादी, आस्तिक तथा पूर्वाग्राही होते हैं।

2. कठोर हृदय वाले –ऐसे व्यक्ति विचारों की अपेक्षा शारीरिक संवेदनाओं में अधिक रुचि रखते हैं। ऐसे व्यक्ति भौतिकवादी, निराशावादी, अधार्मिक तथा संशयवादी होते हैं।

(4) न्यूमैन तथा स्टर्न के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार – न्यूमैन तथा स्टर्न ने व्यक्तित्व को दो भागों में वर्गीकृत किया है–

(1) विश्लेषणात्मक तथा (2) संश्लेषणात्मक।

विश्लेषणात्मक व्यक्ति किसी बात के सूक्ष्मतम अध्ययन में बड़ी रुचि रखते हैं,
संश्लेषणात्मक व्यक्ति समीक्षा करना प्रायः पसन्द नहीं करते।

(5) शेल्डन के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार

शैल्डन ने शारीरिक गुणों के आधार पर इसे तीन भागों में बाँटा है–

(1) कोमल एवं गोलाकार, (2) आयताकार तथा (3) लम्बाकार।

(6) युंग के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार

मनोविश्लेषणवादी युंग ने व्यक्तित्व को दो भागों में बाँटा है–

(1) अन्तर्मुखी तथा (2) बहिर्मुखी

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व –ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील होता है, अपनी ही ओर केन्द्रित रहता है, कर्त्तव्यपरायण होता है, प्रतिक्रियावादी होता है तथा कष्टों के प्रति सजग रहता है।

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की विशेषताएँ – अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(1) बाह्य जगत की वस्तुओं से कम अनुराग होता है।

(2) वे एकांकी होते हैं।

(3) कर्त्तव्यपरायण होते हैं तथा समय का सदैव ध्यान रखते हैं।

(4) यह व्यवहार कुशल नहीं होते, हँसी मजाक एवं व्यर्थ के छलों आदि में नहीं फँसते। सस्ती लोकप्रियता के इच्छुक नहीं होते।

(5) युंग ने अन्तर्मुखी व्यक्तियों को विचार प्रधान, भाव प्रधान, तर्क प्रधान तथा दिव्यदृष्टि प्रधान चार रूपों में विभक्त किया जाता है।

(6) चिन्ताग्रस्त होते हैं, अपनी वस्तुओं तथा कष्टों के प्रति सजग होते हैं।

(7) भाव प्रधान होते हैं, आत्मचिन्तन करते हैं, आत्मोद्धार हेतु लीन होते देखे गये हैं।

(8) कर्त्तव्यपरायण एवं आज्ञाकारी होते हैं, परन्तु शीघ्र ही घबराने लगते हैं।

(9) कम वाचाल होते हैं, लज्जावान होते हैं और पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं में रुचि लेते हैं।

(10) स्वयं के लिये चिन्तनशील होते हैं, शान्त मुद्रा में रहते हैं।

(11) अच्छे लेखक होते हैं, परन्तु अच्छे वक्ता नहीं, क्योंकि चिन्तन का धरातल प्रबल होता है। इनके उदाहरण हैं, जैसे–काण्ट, टैगोर, न्यूटन आदि।

(12) ये प्रायः प्रतिक्रियावादी होते हैं। अपने विचारों को यथार्थ की ओर ले जाने में कोई श्रद्धा नहीं, परन्तु यथार्थ को अपने स्वभाव के अनुरूप ढालने का प्रयास करते हैं।

2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व –ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की रुचि बाह्य जगत में होती है। आध्यात्मिक विषयों में उसकी रुचि नहीं होती। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(1) इनमें कार्यकुशलता की मात्रा अन्तर्मुखी व्यक्ति से अधिक होती है।

(2) अचेतन मन स्वार्थी होता है, परन्तु चेतन मन में स्वार्थ के प्रति घृणा होती है।

(3) ये सबको प्रसन्न करने वाले होते हैं तथा प्रशंसकों से घिरे रहने की कामना करते हैं।

(4) व्यवहारकुशल होते हैं, विचार प्रधान होते हैं तथा निर्णय भी भावों के अनुरूप ही लेते हैं।

(5) साहस का कार्य करने वाले एवं कार्य के प्रति दृढ़ता का भाव रखने वाले होते हैं।

(6) शासन करने का स्वभाव होता है, कष्टों अथवा परेशानियों से घबराते नहीं हैं।

(7) आशावादी तथा परिस्थिति के अनुरूप अपने को ढालने वाले होते हैं।

(8) वातावरण के प्रभाव से शीघ्र प्रभावित होते हैं तथा वातावरण के साथ आसानी से अनुकूलन कर लेते हैं।

(9) आत्मचिन्तनशील नहीं होते, परन्तु सभी के विचारों के आधार पर अपना विचार प्रकट करते हैं।

(10) बाह्य जगत में लगाव रहता है, बाह्य क्रियाओं की ओर संवेदनशील होते हैं।

(11) अनियन्त्रित, अभिमानी तथा आक्रमक होते हैं।

(12) स्वयं की पीड़ा, परिस्थिति की चिन्ता नहीं करते, प्रायः चिन्तामुक्त होते हैं।

(13) सबसे मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने वाले तथा धारा प्रवाह बोलने वाले होते हैं।

(14) संसार में उन्हें प्रशंसा मिले तथा लोग आदर की दृष्टि से देखें, यह उनकी आकांक्षा रहती है। इसे बनाये रखने हेतु वे सदैव अच्छे गुणों को व्यवहार में लाते हैं।

उभयमुखी व्यक्तित्व – कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं,जो दोनों का सम्मिश्रण होते हैं, उन्हें उभयोमुखी (Double faced) या विकासोन्मुखी कहते हैं। उभयमुखी व्यक्तित्व में अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी दोनों के गुण पाये जाते हैं। उभयमुखी व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार अपने व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी या बर्हिमुखी बना लेते हैं। इनका झुकाव दोनों ओर समान रूप से रहता है और परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

(7) व्यक्तित्व का आधुनिक वर्गीकरण

आधुनिक वर्गीकरण तीन प्रकार के व्यक्तित्व पर आधारित है–

(1) भावुक व्यक्ति –ये व्यक्ति अधिक भावुक होते हैं। इनकी क्रियाएँ भावनाओं से संचालित होती हैं।

(2) कर्मशील व्यक्ति– इन व्यक्तियों की रुचि रचनात्मक कार्यों में अधिक होती है। अतः ये व्यक्ति हर समय अपने को किसी न किसी रचनात्मक कार्य में लगाये रखते हैं।

(3) विचारशील व्यक्ति –ये व्यक्ति उच्चकोटि के विचारक होते हैं। ये लोग किसी कार्य को करने से पूर्व भली–भाँति सोच–विचार करते हैं।

व्यक्तित्व के प्रमुख निर्धारक तत्व –

व्यक्तित्व कैसे निर्धारित होता है? वास्तव में मानवीय व्यवहार के अध्ययन में यह सबसे जटिल प्रश्न है, क्योंकि संज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के साथ कई घटक व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान देते हैं। व्यक्तित्व के प्रमुख निर्धारक निम्नलिखित हैं–

1. वंश परम्परा – मनोवैज्ञानिकों का मत है कि व्यवहार में वंश परम्परा का प्रभाव कम दिखाई पड़ता है। स्कॉट के मतानुसार, "इसकी भूमिका के सम्बन्ध में वंश परम्परा पर प्रभाव डालने वाले तत्वों के निर्धारकों का विकास होता है। अनुकरणशीलता इसमें पायी जाती है। स्कॉट का मत है कि व्यक्ति को अपने वंशानुक्रम के द्वारा जीवित रहने तथा विकास करने हेतु अपेक्षित आधारभूत संरचना की प्राप्ति होती है।

2. शारीरिक संरचना– शरीर के स्नायु मण्डल तथा क्रियाओं का व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इसमें शरीर का आकार, स्नायुविक प्रणाली, प्राण प्रणाली आदि को शामिल किया जाता है जिसके माध्यम से व्यक्ति को आधारभूत बौद्धिक योग्यता की प्राप्ति होती है तथा व्यक्ति स्वयं को आगे के जीवन में प्रकट करता है । इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि शारीरिक कमी का मनुष्य के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। मनुष्य की बुद्धि, मानसिक योग्यता, मानसिक दुर्बलता, व्यक्तित्व के विकास में प्रत्यक्षतः सहायक होती है । दुर्बल व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्णतः विकसित नहीं होता है।

3. वातावरणीय प्रभाव – वातावरणीय घटकों का व्यक्तित्व के विकास पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। मनुष्य एक गतिशील सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण में रहता है तथा वातावरणीय विशेषताओं के अनुसार ही उसका विकास होता है। वातावरण दो रूपों में प्रभाव डालता है–सामाजिक वातावरण तथा सांस्कृतिक वातावरण। व्यक्तित्व के निर्धारण में परिवार तथा संस्कृति का अत्यधिक महत्व होता है। सामाजिक तथा मनोरंजन संबंधी क्रियाएं व्यक्तित्व के विकास में विशेष भूमिका निभाती हैं

4. बाल्यावस्था के अनुभव – बाल्यकाल के अनुभव भी स्थायी रूप से मनुष्य के व्यक्तित्व का अंग बन जाते हैं। माता–पिता तथा घर के अन्य सदस्यों का व्यवहार भी बच्चे के विकसित मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है !

5. सामाजिक कारक– व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारकों को मोटे रूप में निम्न तीन भागों में बांटा जा सकता है–**घर, स्कूल एवं समाज।** सभी मनोवैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि व्यक्तित्व के विकास में घर के परिवेश का बड़ा प्रभाव पड़ता है। यद्यपि घर के परिवेश का जीवन पर्यन्त व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है, फिर भी बाल्यावस्था में यह प्रभाव सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसी समय व्यक्तित्व के आधारभूत तत्वों का निर्धारण होता है। घर के परिवेश में बालक के अतिरिक्त जितने भी सदस्य होते हैं, उन सबका बालक के व्यक्तित्व एवं व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, संयुक्त परिवार में पले बालक का व्यक्तित्व छोटे परिवार में पले बालक से पृथक होता है। माता–पिता के व्यक्तित्व तथा व्यवहार का बालक के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास एवं व्यवहार पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

अनेक शोध अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि बालक के अपराधी होने में परिवार की स्थिति का बड़ा प्रभाव पड़ता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एल्फेड एडलर का मत है कि परिवार में बालक के जन्म क्रम का भी उसके व्यक्तित्व पर बड़ा प्रभाव होता है। प्रायः निविध जन्मक्रम के बालकों के प्रति एक–सा व्यवहार नहीं किया जाता है। पारिवारिक स्थिति से उसके कार्यों पर प्रभाव पड़ता है तथा इससे उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। बालक के व्यक्तित्व पर स्कूल, शिक्षक तथा सहपाठियों का भी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जिस तरह घर में माता–पिता बालक के सामने आदर्श के रूप में होते हैं, उसी प्रकार शिक्षक बालक के सामने आदर्श के रूप में होता है। शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली न होने पर उसका बालक के व्यक्तित्व पर उत्तम प्रभाव नहीं पड़ता है ।

समाज तथा संगठन का भी व्यक्तित्व पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है। समाज सामाजिक सम्बन्धों का ताना–बाना है जो विभिन्न व्यक्तियों को एक–दूसरे से सम्बन्धित रखता है। व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध से उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक स्थिति, संस्कृति, सामाजिक परिवेश में नियम संहिता, सामाजिक भूमिका आदि कारक भी मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।